B.Ed. I[st] Year 2020

Paper Code :- E-103 GROWING UP AS A LEARNER

UNIT V

Topic :- Creativity (सृजनात्मकता)

DR. K.C GAUR
Head
Faculty of Education
D.P.B.S.P.G. College,
Anoopshahr. 203390
Bulandshahr (U.P.)

सृजनात्मकता (Creativity) :-

किसी भी समाज व राष्ट्र के विकास में वैज्ञानिकों की भाँति सृजनशील व्यक्तियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। सृजनात्मकता व्यक्ति का मौलिक गुण है। प्रत्येक व्यक्ति में यह गुण किसी न किसी मात्रा में पाया जाता है। वास्तव में संसार के समस्त प्राणियों में सृजनात्मकता होती है। मानव-जीवन को सुखमय बनाने के लिए नवीन आविष्कार करने तथा समस्याओं का समाधान खोजने के कार्य में सृजनात्मकता या रचनात्मकता व्यक्ति के अन्दर वह योग्यता है जो नवीन वस्तु का निर्माण करने, समस्याओं का समाधान ढूँढने, नवीन परिस्थितियों में समायोजन करने, जीवन में एक अभिनव समझ, सोच व व्यवहार से होता है।

सृजनात्मकता का सामान्य आशय है सृजन करना, रचना करने की योग्यता अथवा शक्ति। यह सृजन किसी भी प्रकार का हो सकता है, पुराने प्रकार का अथवा कुछ नये प्रकार का। परन्तु मनोविज्ञान में सृजनात्मकता से तात्पर्य मनुष्य के उस गुण, योग्यता या शक्ति से होता है जिसके द्वारा कुछ नया सृजन करता है; जैसे - कवि द्वारा नई कविता की रचना, लेखक द्वारा नये मौलिक विचारों से युक्त लेख की रचना एवं वैज्ञानिकों के द्वारा नये-नये तथ्यों की खोज आदि।

सृजनात्मकता का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and definition of Creativity) :-

सृजन शब्द संस्कृत भाषा के 'सृज' धातु से निर्मित है जिसका अर्थ 'निर्माण करना', रचना करना, इत्यादि से है। साधारण शब्दों में सृजन अथवा रचना सम्बन्धी योग्यता का विकास करना ही सृजनात्मकता (Creativity) है। सृजनात्मकता को केवल कलात्मकता ही नहीं माना जा सकता बल्कि आधुनिक मनोविज्ञान में इसका और भी व्यापक क्षेत्र है। सृजनात्मकता व्यक्ति के क्रिया-कलापों का अति महत्त्वपूर्ण गुण है मानव के क्रिया-कलापों एवं निष्पत्ति के लिए सृजनात्मकता आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति यथा - बढ़ई, विश्वकर्मा, चित्रकार, सोनार आदि के कार्य में सृजनात्मकता के दर्शन होते हैं। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति में सृजनात्मकता होती है किन्तु उसका विकास किया जाना आवश्यक है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

सृजनात्मकता के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के विचार जानना आवश्यक है। यहाँ कुछ विद्वानों के विचार प्रस्तुत किये जा रहे हैं:-

(1) डा० कामिल बुल्के के अनुसार :- "क्रिएटिव शब्द का अर्थ सृजनात्मक, रचनात्मक तथा सर्जक बताये हैं।"

(2) भारत सरकार ने अपने तकनीकी कोश में क्रिएटिविटी को सृजनशीलता स्वीकारा है।

(3) गिलफोर्ड के अनुसार (Guilford):- "सृजनात्मक बालकों में प्रायः सामान्य गुण होते हैं, उनमें न केवल मौलिकता का गुण होता है वरन् उनमें लचीलापन, प्रवाहमयता, प्रेरणा एवं संयमता की योग्यता भी पाई जाती है।"[1]

(4) आइजनेक (Eysenck) के अनुसार:- "सृजनशील बालक नवीन सम्बन्धों के ज्ञान को, इसकी उत्पत्ति में चिन्तन के परम्परागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विचार उत्पन्न करने की योग्यता रखता है।"[2]

(5) स्टेन (Stein) के अनुसार:- "सृजनात्मकता वह कार्य है, जिसका परिणाम नवीन हो और किसी समय किसी समूह द्वारा उपयोगी और सन्तोषजनक रूप में स्वीकार किया जाय।"[3]

(6) लूथी (Luther) के अनुसार:- "सृजनात्मकता किसी चीज को वास्तव में उत्पन्न करने, बनाने या अभिव्यक्त करने, जो कम से कम एक भाग में स्वयं से उत्पन्न होती है कि योग्यता और सुविधा है।"[4]

7. बैरन (Barron) के अनुसार:- सृजनात्मक बालक पहले से विद्यमान वस्तुओं एवं तत्वों को संयुक्त कर नवीन रचना करता है।"[5]

---

1. "Creative children have a more general traits that includes not only Originality, but flexibility, fluency and motivational and temperamental traits as well." (Guilford).
2. "The creative children have the ability to see new relationship. Produce unusual ideas and to deviate from traditional pattern of thinking." (Eysenck).
3. "When it results in a novel work that is acceptable as useful or satisfactory by a group at some point in time." (Stein).
4. "Creativity is an ability and facility to actually produce, make, express something that at least in part is originated from one-self." (Luthe).
5. "Creative children means, to make new combinations from the already existing objects and eliments." (Barron).

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त परिभाषाओं एवं मनोवैज्ञानिकों के विचारों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सृजनात्मकता में विभिन्न वस्तुओं के संयोग से नवीनता उत्पन्न की जाती, वह उपयोगी हो और उसे समाज द्वारा मान्यता प्राप्त होनी चाहिए। निष्कर्ष स्वरूप में कुछ बिन्दु प्रस्तुत किया जा रहा है:-

(i) सृजनात्मकता मौलिक होती है।

(ii) सृजनात्मकता परिवर्तनशील होती है।

(iii) सृजनात्मकता का मूलाधार चिन्तन होता है।

(iv) सृजनात्मकता में पूर्ण अथवा आंशिक रूप में नवीनता होती है।

(v) सृजनात्मकता समूह के लिए उपयोगी तथा उसके द्वारा मान्य होती है।

(vi) सृजनात्मकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पाई जा सकती है।

(vii) सृजनात्मकता उत्पादन से सम्बन्धित होती है।

सृजनात्मकता का स्वरूप या प्रकृति (Nature of Creativity):-

प्रारम्भ में इस योग्यता का सम्बन्ध केवल कलात्मक रचनाओं से माना जाता है किन्तु आधुनिक मनोविज्ञान में इसका क्षेत्र व्यापक है। अब सृजनात्मकता का सम्बन्ध मात्र विभिन्न कलाओं से नहीं वरन् जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित माना जाता है। व्यापक रूप से इसका प्रयोग ज्ञान या सूचना के सम्पूर्ण क्षेत्र में सम्बन्धित करके किया जाता है। इस तथ्य का सम्बन्ध अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति के लोगों, अन्वेषणात्मक कार्यों तथा नवीन उत्पादनों से है। कुछ विद्वान इसका सम्बन्ध काव्य रचना, कलात्मक कार्य और वैज्ञानिक सिद्धान्तों से मानते हैं तथा कुछ अन्य विद्वान इसके उपयोगी परिणाम पर बल देते हैं। ये दोनों बातें तकनीकी उद्देश्यों में भले ही सही हों किन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सर्वथा उपयुक्त नहीं है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से तो कोई भी मानसिक क्रिया जो अन्वेषण भी केवल विज्ञान या तकनीकी में ही नहीं जीवन के किसी भी क्षेत्र, 'साहित्य और कला' सभी में हो सकता है।

सृजनात्मक बालकों की पहचान (Identification of Creative children)

बालकों में सृजनात्मकता का उचित दशा में विकास करने के लिए यह अति आवश्यक है कि शिक्षक सृजनात्मक बालकों को पहचानने का प्रयास करें। यह पहचान निम्नांकित रूप में की जा सकती है:→

1. **स्वतन्त्र निर्णय क्षमता (Independent Judgement Capacity):-** सृजनात्मकता की एक महत्त्वपूर्ण पहचान है। जो बालक किसी समस्या के प्रति स्वतन्त्र निर्णय करने में सक्षम होता है, वह सृजनात्मक बालक माना जाता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner